अर्नोल्फिनी के ब्याह में दुनिया दीवानी

हाथ से बनाई गई और कैमरे से खींची गई तस्वीर में क्या फर्क है? कैमरा जो देखता है उसे जस का तस दर्ज कर लेता है। जबकि चित्रकार सामने की वस्तु को अनदेखा कर जो नहीं है उसे चित्र में शामिल कर सकता है। अपनी कल्पना से चित्र को इतना दिलचस्प बना सकता है कि लोग देखते रह जाएँ।

दिलीप चिंचालकर

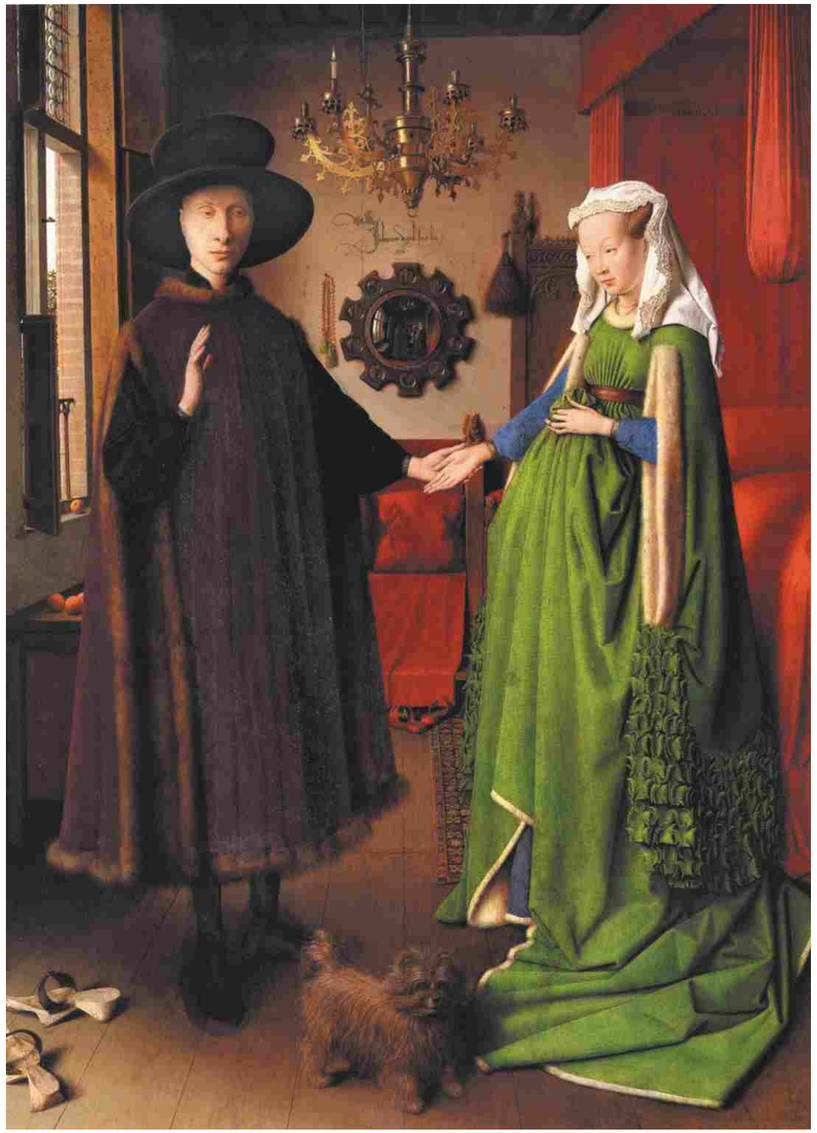

अर्नोल्फिनों दम्पत्ति के घर में कभी लगी यह तस्वीर धनी व्यापारियों, शाही परिवारों और फौजियों के हाथों से गुज़रकर, नीदरलैण्ड्स, हंगरी, स्पेन, पुर्तगाल, फ्राँस होती हुई 1813 में इंग्लैण्ड पहुँची। सन् 1842 से यह चित्र लन्दन की राष्ट्रीय कलादीर्घा में लगा हुआ है।

यह तस्वीर आज से साढ़े पाँच सौ साल पहले की है। तब फोटोग्राफी की खोज नहीं हुई थी। नीदरलैण्ड के चित्रकार जॉन वॉन आइक के बनाए इस चित्र का नाम "अर्नोल्फिनी का ब्याह" है। इस चित्र पर दुनिया में कई बहसें हुई हैं व तर्क दिए गए हैं।

इस चित्र को देख पहली ही नज़र में समझ आ जाता है कि यह किन्हीं गम्भीर क्षणों का चित्रण है। स्त्री और पुरुष अपनी बेहतरीन पोशाक पहने हैं। उतारकर अलग रखे सैंडिल इशारा करते हैं कि कोई पवित्र रस्म पूरी की जा रही है। कुत्ते का वहाँ होना सम्बन्धों में ईमानदारी का इशारा है। झूमर में जलती एक मोमबत्ती ईश्वर की उपस्थिति का प्रतीक है। लम्बे समय तक माना जाता रहा था कि यह पेन्टिंग अरिगो अर्नोल्फिनी और ज्याँ सिनामी के ब्याह की यादगार है।

पीछे दीवार पर लिखे वाक्य का मतलब यह है कि जॉन यहाँ मौजूद था और यह 1434 की बात है। दीवार पर लटके आइने में चार लोग दिखाई दे रहे हैं। दो तो वे हैं जिनका यह चित्र है – यानी पति-पत्नी। और दो वे हैं जो कमरे में तो हैं पर चित्र में दिखाई नहीं दे रहे हैं। उनमें से एक चित्रकार है। तो क्या यह चित्र एक तरह का प्रमाण है इस शादी का?

आगे देखें कि चित्रकार और क्या बताता है। इस चित्र में फ्राँस या बरगंडी (फ्राँस का एक क्षेत्र) के धनी समाज का रहन-सहन है। यहीं पर बैठक या ड्रॉइंग-रूम में पलंग रखने का चलन था। वर्ना क्या सोने के कमरे में शादी की रस्म होती? ज़मीन पर बिछा ईरानी गलीचा भी इनकी अमीरी की कहानी बता रहा है। असल में यह गलीचा इतना महँगा हुआ करता था कि आमतौर पर इसे मेज़ पर ही बिछाया जाता था। खिड़की के नीचे मेज़ पर संतरे रखे हैं। उन दिनों फ्राँस में संतरे केवल अमीर लोग ही खरीद सकते थे। मौसम गर्मी का है। खिड़की के बाहर लगे चेरी के पेड़ पर फल लगे हैं। अरिगो ने तिनकों का बना हैट पहन रखा है जो गर्मियों का फैशन है। लेकिन दोनों के बढ़िया कपड़े जाड़ों के लायक हैं। हो सकता है यह पोट्रेट सिर्फ शान-शौकत दिखाने के लिए बनवाया गया हो।

कुछ साल पहले पता चला कि अर्नोल्फिनी और सिनामी का ब्याह तो 1447 में हुआ था। यानी 1434 में तस्वीर बनने के 13 साल बाद। और चित्रकार जॉन तो 1441 में ही गुज़र गए थे। तब सुझाया गया कि यह जोड़ा अरिगो के चचेरे भाई निफोलाया अर्नोल्फिनी और कोस्टांजा ट्रेंटा का है। लेकिन कोस्टाज़ा की मृत्यु 1433 में हो चुकी थी। हो सकता है यह चित्र उनकी याद में बनाया गया हो!

अगर ऐसा है तो झूमर की मोमबत्ती का एक दूसरा अर्थ निकलता है। पुरुष जीवित है इसलिए उसके ऊपर मोमबत्ती जल रही है। स्त्री अब नहीं है इसलिए उसके ऊपर की मोमबत्ती जलकर खत्म हो गई है। आइने के फ्रेम में यीशु मसीह के जीवन के छोटे-छोटे चित्र बने हैं। पुरुष की तरफ के चित्र जीवन के हैं, और स्त्री की ओर के मृत्यु से सम्बन्धित।

इस चित्र में और भी संकेत हैं। जानकार इनके अलग-अलग अर्थ निकालते नहीं थकते हैं। देवदार के पटिए पर तैल रंगों से बना यह चित्र लगभग सामान्य ड्रॉइंग-शीट के आकार का है। गौर से देखो। यहाँ हर वस्तु का अर्थ है। दुल्हन के कपड़े पर किया हुआ काम, महँगे गहने, झाड़-फानूस की बारीकियाँ, आइने में अपना प्रतिबिम्ब, रोशनदान में लगे नक्काशीदार काँच मूल चित्र देखते हुए। मुझे तो आइने में प्रतिबिम्ब देखने के लिए लैंस का उपयोग करना पड़ा। नाखून भर की जगह में चित्रकार ने यीशु का जीवन-चित्रण किस बारीकी से किया है! चित्र अगर कैमरे से लिया होता तो इतना खुरापाती नहीं होता कि सालों बाद भी देखने वालों को दीवाना बनाए रखे। चकमक

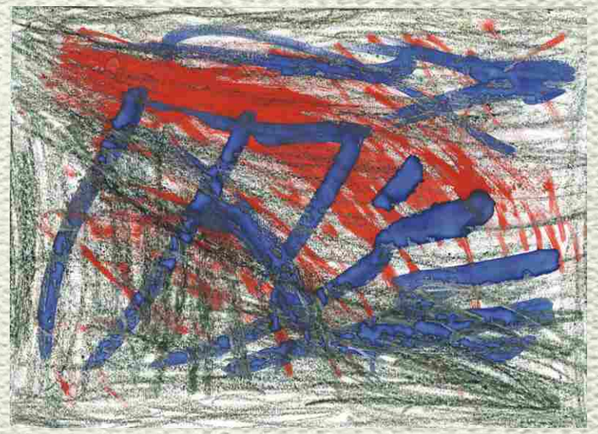

मेरे चित्र की कहानी

खूब गर्मी पड़ने और तालाब सूखने की कहानी...
भोपाल ताल सूख गया। काली-काली ज़मीन दिखाई देती है।
और लाल-लाल रंग की गर्मी (धूप) उस पर पड़ रही है।

(पहली में पढ़ने वाले तुका ने यह चित्र बनाने के बाद अपनी मम्मी को उसकी कहानी सुनाई।)